

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्री उतुमूर् रीरराघराचार्य अनुगृहीता  
॥ श्री लम्प्रीहयरदन प्रपत्तिः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्री लक्ष्मीहयवदन प्रपत्तिः ॥

रिशुद्धरिज्जानघनस्वरूपं

रिज्जान रिश्राणन वद्वदीक्षम्।

दयानिधिं देहभूतां शरण्यं

देरं हयग्रीरमहं प्रपद्ये ॥ 1 ॥

ब्रह्माणमादौ ब्यदधादमुष्मे

रेदांश्च यः स्म प्रहिणोति नित्यान्।

स्वगोचरज्जान रिधायिनं तं

देरं हयग्रीरमहं प्रपद्ये ॥ 2 ॥

उदगीथतारस्वरपूरमन्तः

प्ररिश्य पातालतलादहर्षीं।

आम्नायमाकथहयो य एतं

देरं हयग्रीरमहं प्रपद्ये ॥ 3 ॥

प्रदाय पुत्राय पुनः श्रुतीर्यो

जघान दैतेयो नियताक्किरासम्।

हरैश्च करैश्च तमर्च्यमानं

देरं हयग्रीरमहं प्रपद्ये ॥ 4 ॥

यन्नाभिनालीकदलसुनीर

बिन्दुस्थितौ तौ मधुकैटभाथे।

रेदापहाराय तमो रजस्तं

देरं हयग्रीरमहं प्रपद्ये ॥ 5 ॥

কাম্যার্চ্যতাং প্রাপ্য ররং সুরেষু  
গতেষু যজ্ঞাগ্রহরোহর্থিতো যঃ।  
অদর্শযৎ কায হযং রপুস্তং  
দেৱং হযগ্রীৱমহং প্রপদ্যে ॥ 6 ॥

যো জাযমানং পুরুষং প্রপশ্যন্  
মোক্ষার্থচিত্তাপরমাতনোতি।  
ৱিদ্যাধিদেৱং মধুসূদনং তং  
দেৱং হযগ্রীৱমহং প্রপদ্যে ॥ 7 ॥

আদিত্যবিশ্বেহশ্ৱরপুর্দধৎ সন্  
অযাতযামান্ নিগমান্ অদিক্ষৎ।  
যো যাজ্ঞরন্ধ্যায দযানিধিং তং  
দেৱং হযগ্রীৱমহং প্রপদ্যে ॥ 8 ॥

ৱিজ্ঞানদানপ্রথিতা জগত্যাং  
র্যাসাদযো রাগপি দক্ষিণা সা।  
যদ্বীক্ষণাংশাহহিতরৈভরাস্তং  
দেৱং হযগ্রীৱমহং প্রপদ্যে ॥ 9 ॥

মৎস্যাদিরূপাণি যথা তথৈৱ  
নানারিধাচার্যরপুংষি গৃহ্নন্।  
ৱেদান্তৱিদ্যাঃ প্রচিনোতি যস্তং  
দেৱং হযগ্রীৱমহং প্রপদ্যে ॥ 10 ॥

শ্রেষ্ঠঃ কৃতজ্ঞঃ সুলভোহন্ৱিতানাং  
শান্তঃ সুবুদ্ধিঃ প্রথিতো হি ৱাজী।  
তদাননারিষ্কৃতসদগুণৌঘং  
দেৱং হযগ্রীৱমহং প্রপদ্যে ॥ 11 ॥

हस्तैर्दधानं दरचक्रकोश -  
 र्याख्यानमुद्राः सितपद्मपीठम्।  
 रिद्याख्यलक्ष्म्याङ्गितरामभागं  
 देरं हयत्रीरमहं प्रपद्ये ॥ 12 ॥

॥ इति श्री लक्ष्मीहयरदन प्रपत्तिः समाप्ता ॥